LOOK N LEARN
CHILDREN'S JAIN
E-book

Serial No. 22

The knowledge of 32 Aagams in your phone

Inspired by Rashtrasant Param Gurudev Shree Namramuni Maharaj Saheb

Think twice before you speak

STORY TIME

अपने नीचे भवनपति देवलोक है। भवनपती देवलोक के राजा चमरेन्द्र देव है। वे बहुत शक्तिशाली है। वे जो एक बार ताली बजाए तो पुरे भारत की इमारते है वो गिर कर नाश हो जाए।

Kids do you know, वे एक बार फूँक मारे तो समुद्र के पानी में सुनामी आ जाए, और पूरा भारत पानी में बहने लगे।

भावार्थः हमें अपने Talent का गलत इस्तमाल (misuse) नहीं करना चाहिए।

Below Bharat kshetra where we stay, there is Bhavanpati Devlok. Bhavanpati Devlok has a king called Chamrendra Dev. If he only claps once, all the buildings of India can demolish. If he blows air only once, there will be Tsunami in all of India. If he opens his eyes, then he can harass Devtas of Devlok.

Moral: We should never misuse our talent.

यदि भवनपती देव को ऊपर देवलोक में जाना हो तो उनको कुछ नियमों का पालन करना चाहिए। उन्हें तीर्थंकर या साधु के पास आकर उनका शरण स्वीकार करना चाहिए तो ही वे उपर देवलोक में जा सकते है।

एक समय की बात है जब परमात्मा महावीर स्वामी बिराजमान थे। चमरेन्द्र को उपर देवलोक में जाने की ईच्छा हुई। नियम अनुसार वे तुरंत ही महावीर स्वामी का

शरण लेने जाते है और उनको वंदन करते है और कहते है, "हे भगवान! मैं आपका शरण स्वीकार करता हूँ" यह बोलकर वे उडकर प्रथम देवलोक में जाते है।

भावार्थः हमें कुछ करने या बोलने से पहले बार बार सोचना चाहिए। हम जब परमात्मा का यानि धर्म का स्वीकार करते है तो हमारे आस पास सुरक्षा कवच बन जाता है।

If Bhavanpati Dev wants to go to upper Devlok, he has to follow certain rules. They have to seek the shelter of Tirthankars, or Guru. Then only they can go to upper Devlok. Once while listening to Parmatma Mahavir's discourse, Chamrendra bowed down to Parmatma and said, " I desire to seek your shelter" and he flew to the first Devlok.

Moral: Think twice before you speak and act and once you realise your mistake, do confess. Religion is the only refuge. A safety energy wheel is created around them. This safety wheel takes care of your body and soul.

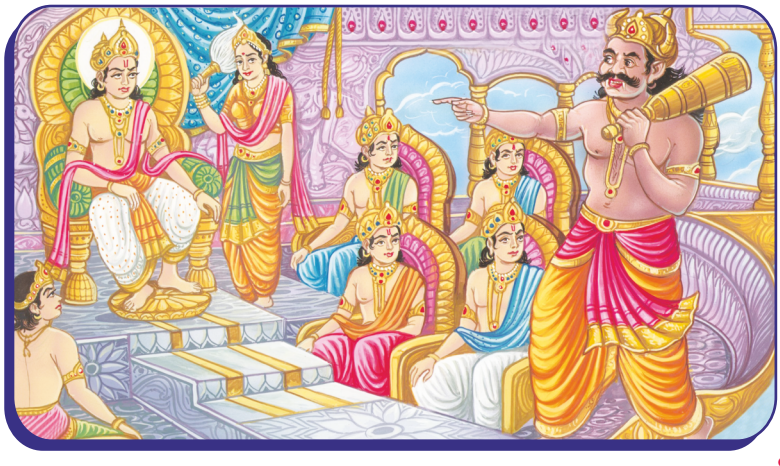

प्रथम देवलाक में जाकर वहाँ धमाल मचाते है, सब तोडफोड करने लगते है, improper (बूरी भाषामें) बात करने लगते है। सभी देव चिंतीत हो जाते है। वहाँ उपस्थित ईन्द्र शक्तिशाली थे उनके पास व्रज (weapon) था। वे जिस पर भी वह व्रज फेंकते और जिसे भी वह व्रज स्पर्श होता है, वह व्यक्ति जलके भस्म हो जाता और वह व्रज जिस पर भी फेंका जाता, उस पर यह व्रज स्पर्श होए बिना वापस नहीं आता।

जब चमरेन्द्र पर व्रज फेंका गया तब वह घबरा जाते है और तेजीसे दौड़ने (full

speed) का प्रयास करते है। वह सोचते है, "मैंने जिसका शरण अंगीकार किया है, वहाँ में पहोंच जाऊँ तो! मुजे अब परमात्मा महावीर के अलावा कोई शरण नहिं देगा। मैं तुरंत नहिं पहुँचा तो वह वज्र मुजे नष्ट कर देगा। ऐसा सोचकर वह पृथ्वी पर जहाँ प्रभु महावीर बिराजमान है वहाँ आते है। खुद का छोटा रुप बनाकर प्रभु के दो पैंरो के बीच कीडा बन बैठ जाते है।"

भावार्थः परमात्मा को केवल संकट के समय ही नहिं सुख के समय में भी याद करना चाहिए।

Once he went to first Devlok, Chamrendra started destroying everything. He started conversing with everybody in bad language. All the celestial beings were worried. One celestial being had a diamond weapon called Vajra and whoever touched that weapon he could get burnt within no time. When Devta attacks with that weapon, it does not come back unless it touches and harms that person. When the Vajra was thrown at Chamrendra, he got so scared that he fled in jet speed to seek refuge. He went to Parmatma, reduced his body size and sat at the lotus feet of the Parmatma.

Moral: Aren't we so similar? Don't we also run to God only when we are in trouble?

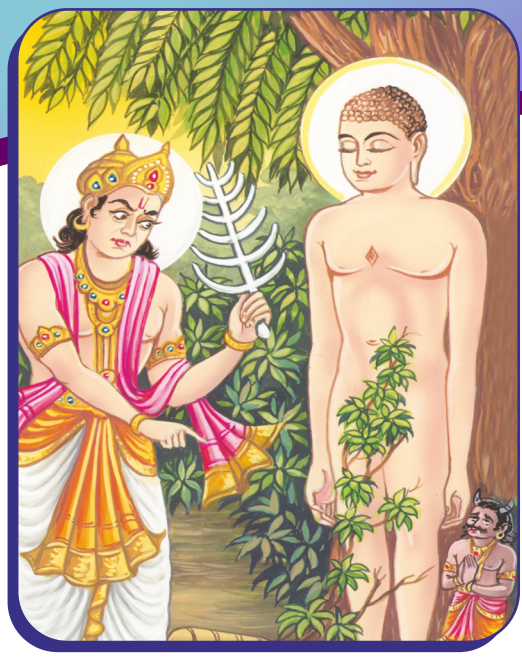

तब ईन्द्र को realize होता है कि, "चमरेन्द्र देव, देवलोक आए थे तो वह कोई तीर्थंकर या साधु का शरण लेकर ही उपर आए होंगे और जो उन्होंने कोई तीर्थंकर का शरण स्वीकार किया है, धर्म का शरण स्वीकार किया है तो उन पर वज्र से वार नहीं करना चाहिए" इसलिए वे full speed में नीचे आकर अपने व्रज को पकड लेते हैं। परमात्मा महावीर के पास आकर माफी मांगते है।

"प्रभु आपके शरण में आए हुए व्यक्ति पर मैंने व्रज फेंका, मुझे माफ किजीए, माफी दिजीए, क्षमा किजीए।"

भावार्थः परमात्मा की शरण में जो रहते है, जो उनकी शरण में आते है, उसे कोई problems नहिं आते। एक सुरक्षा कवच बना रहता है। यह सुरक्षा कवच अपने शरीर एवं आत्मा की care करता है। परमात्मा साधु भगवंतो और केवली प्ररुपीत धर्म के शरण में जाना वह है मांगलिक...

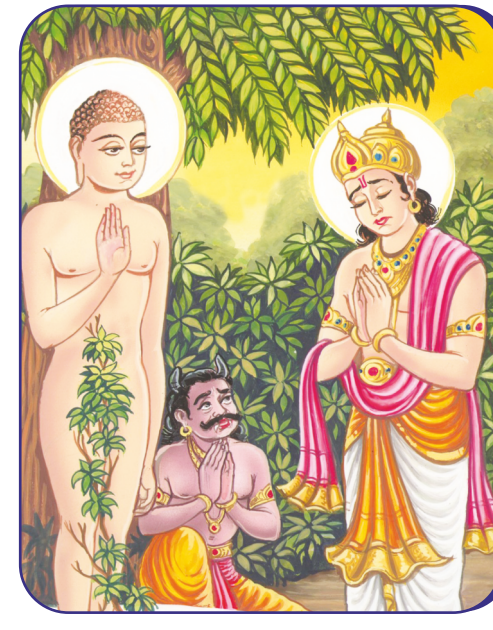

The devta, who had thrown Vajra realised that Chamrendra has sought refuge of Parmatma, so he immediately came to earth and bowed down to Parmatma and asked for forgiveness. The Devta confessed, "Oh God! I threw Vajra at the person, who came to your shelter. Please forgive me."

Moral: Think twice before you speak and act when you realize your mistake, do confession. Those who seek the shelter of Parmatma, are always protected.